



द. सुनो किशोरी



— आशारानी व्होरा

लेखक परिचय : श्रीमती आशारानी व्होरा जी का जन्म ७ अप्रैल १९२१ को अविभाजित भारत के झेलम जिले की तकवाल तहसील स्थित ग्राम दुलहा में हुआ। आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विषयक लेखन में आप अपना अलग स्थान रखती हैं। प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपके लेख धारावाहिक रूप से छपते रहे। विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी रहीं महिलाओं के जीवन संघर्ष को चित्रित करना और वर्तमान नारी वर्ग के सम्मुख आदर्श प्रस्तुत करना आपके लेखन कार्य का प्रमुख उद्देश्य रहा है। आपकी रचनाओं ने लेखन की नयी धारा को जन्म दिया है और हिंदी साहित्य में नारी विमर्श लेखन की परंपरा को समृद्ध किया है। आप अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित हैं। आपका निधन २००९ में हुआ।

प्रमुख कृतियाँ : 'भारत की प्रथम महिलाएँ', 'स्वतंत्रता सेनानी लेखिकाएँ', 'क्रांतिकारी किशोरी', 'स्वाधीनता सेनानी', 'लेखक-पत्रकार' आदि।

विधा परिचय : अनेक साहित्यकारों, महान राजनीतिकों द्वारा अपने परिजनों को भेजे गए पत्रों ने तत्कालीन साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक स्थितियों का लेखा-जोखा प्रखरता से प्रस्तुत किया है। इन पत्रों का कला पक्ष साहित्यिक कलात्मकता को स्पर्श करता है।

पाठ परिचय : लेखिका ने अपनी इस नवीनतम पत्र शैली में किशोरियों की शंकाओं, प्रश्नों एवं दुश्चिंताओं का समाधान एक माँ, अंतरंग सहेली और मार्गदर्शिका के रूप में किया है। किशोरियों के हृदय में झाँककर मित्रवत उन्हें उचित-अनुचित, करणीय-अकरणीय का बोध कराया है। हमारे देश की नयी पीढ़ी पश्चिमी देशों से आ रहे मूल्यों और संस्कारों का अंधानुकरण करती जा रही है। हमारे देश की संस्कृति और परंपराओं को कालबाह्य और त्याज्य मानकर उनकी अवहेलना कर रही है। आत्मनिर्भर हो जाने से युवक-युवतियों का जीवन के प्रति बदला दृष्टिकोण, विवेकहीनता और जल्दबाजी में लिया जाने वाला निर्णय नयी पीढ़ी का जीवनसौंदर्य नष्ट कर रहा है। लेखिका के अनुसार नये मूल्यों को भारतीय संस्कृति, परंपराओं और संस्कारों की भूमि पर उतारकर स्वीकारना होगा।

सुनो सुगंधा ! तुम्हारा पत्र पाकर खुशी हुई। तुमने दोतरफा अधिकार की बात उठाई है, वह पसंद आई। बेशक, जहाँ जिस बात से तुम्हारी असहमति हो; वहाँ तुम्हें अपनी बात मुझे समझाने का पूरा अधिकार है। मुझे खुशी ही होगी तुम्हारे इस अधिकार प्रयोग पर। इससे राह खुलेगी और खुलती ही जाएगी। जहाँ कहीं कुछ रुकती दिखाई देगी; वहाँ भी परस्पर आदान-प्रदान से राह निकाल ली जाएगी। अपनी-अपनी बात कहने-सुनने में बंधन या संकोच कैसा ?

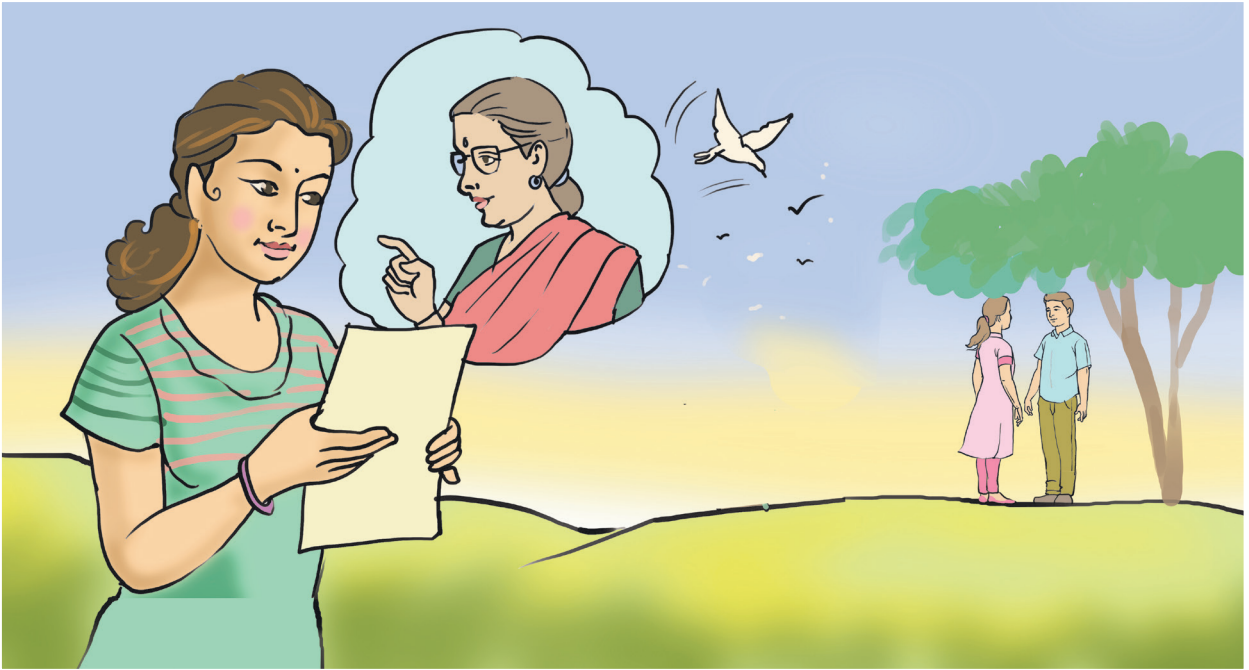
मैंने तो अधिकार की बात यों पूछी थी कि मैं उस बेटी की माँ हूँ जो जीवन में ऊँचा उठने के लिए बड़े ऊँचे सपने देखा करती है; आकाश में अपने छोटे-छोटे डैनों को चौड़े फैलाकर।

धरती से बहुत ऊँचाई में फैले इन डैनों को यथार्थ से दूर समझकर भी मैं काटना नहीं चाहती। केवल उनकी डोर

मजबूत करना चाहती हूँ कि अपनी किसी ऊँची उड़ान में वे लड़खड़ा न जाएँ। इसलिए कहना चाहती हूँ कि 'उड़ो बेटी, उड़ो, पर धरती पर निगाह रखकर।' कहीं ऐसा न हो कि धरती से जुड़ी डोर कट जाए और किसी अनजाने-अवांछित स्थल पर गिरकर डैने क्षत-विक्षत हो जाएँ। ऐसा नहीं होगा क्योंकि तुम एक समझदार लड़की हो। फिर भी सावधानी तो अपेक्षित है ही।

यह सावधानी का ही संकेत है कि निगाह धरती पर रखकर उड़ान भरी जाए। उस धरती पर जो तुम्हारा आधार है- उसमें तुम्हारे परिवेश का, तुम्हारे संस्कार का, तुम्हारी सांस्कृतिक परंपरा का, तुम्हारी सामर्थ्य का भी आधार जुड़ा होना चाहिए। हमें पुरानी-जर्जर रूढ़ियों को तोड़ना है, अच्छी परंपराओं को नहीं।

परंपरा और रूढ़ि का अर्थ समझती हो न तुम ? नहीं ! तो इस अंतर को समझने के लिए अपने सांस्कृतिक आधार



से संबंधित साहित्य अपने कॉलेज पुस्तकालय से खोजकर लाना, उसे जरूर पढ़ना। यह आधार एक भारतीय लड़की के नाते तुम्हारे व्यक्तित्व का अटूट हिस्सा है, इसलिए।

बदले वक्त के साथ बदलते समय के नये मूल्यों को भी पहचानकर हमें अपनाना है पर यहाँ 'पहचान' शब्द को रेखांकित करो। बिना समझे, बिना पहचाने कुछ भी नया अपनाने से लाभ के बजाय हानि उठानी पड़ सकती है।

पश्चिमी दुनिया का हर मूल्य हमारे लिए नये मूल्य का पर्याय नहीं हो सकता। हमारे बहुत-से पुराने मूल्य अब इतने टूट-फूट गए हैं कि उन्हें भी जैसे-तैसे जोड़कर खड़ा करने का मतलब होगा, अपने आधार को कमजोर करना। या यूँ भी कह सकते हैं कि अपनी अच्छी परंपराओं को रूढ़ि में ढालना।

समय के साथ अपना अर्थ खो चुकी या वर्तमान प्रगतिशील समाज को पीछे ले जाने वाली समाज की कोई भी रीति-नीति रूढ़ि है, समय के साथ अनुपयोगी हो गए मूल्यों को छोड़ती और उपयोगी मूल्यों को जोड़ती निरंतर बहती धारा परंपरा है, जो रूढ़ि की तरह स्थिर नहीं हो सकती।

यही अंतर है दोनों में। रूढ़ि स्थिर है, परंपरा निरंतर गतिशील। एक निरंतर बहता निर्मल प्रवाह, जो हर सड़ी-गली रूढ़ि को किनारे फेंकता और हर भीतरी-बाहरी, देशी-विदेशी उपयोगी मूल्य को अपने में समेटता चलता

है। इसीलिए मैंने पहले कहा है कि अपने टूटे-फूटे मूल्यों को भरसक जोड़कर खड़ा करने से कोई लाभ नहीं, आज नहीं तो कल, वे जर्जर मूल्य भरहराकर गिरेंगे ही।

इसी तरह पश्चिमी मूल्य भी, जो हमारी धरती के अनुकूल नहीं हैं, ज्यों-के-त्यों यहाँ नहीं उगाए जा सकते। उगाएँगे, तो वे पौधे फलीभूत नहीं होंगे। होंगे, तो जल्दी झड़ जाएँगे। वे फल हमारे किसी काम के नहीं होंगे।

मुझे लगता है, पत्र का यह अंश आज तुम्हारे लिए कुछ भारी हो गया। बेहतर है, अपनी संस्कृति व परंपरा को ठीक से समझने के लिए फुरसत के समय इससे संबंधित साहित्य पढ़ना। इसलिए कि यह बुनियादी जानकारी हर भारतीय लड़की के लिए जरूरी है, जिससे वह अपनी धरती, अपनी जड़ों को अच्छी तरह पहचान सके।

यहाँ तुम्हारी सहेली रचना के संदर्भ में यह प्रसंग इसलिए कि वह इस सीमारेखा को नहीं समझ पा रही। एक रचना का ही संघर्ष नहीं है यह, एक पूरी पीढ़ी का संघर्ष है। नयी पीढ़ी पुराने मूल्यों को तो काट फेंकना चाहती है पर नये मूल्यों के नाम पर केवल पश्चिमी मूल्यों को ही जानती-पहचानती है। कहें, उधार लिए मूल्यों से ही काम चला लेना चाहती है। नये मूल्यों के निर्माण का दम-खम अभी उसमें नहीं आया है।

सुनो, नये मूल्यों का निर्माण करना है तो नये ज्ञान-विज्ञान को पहले अपनी धरती पर टिकाना होगा।

अपनी सामर्थ्य और अपनी सीमाओं में से ही उसकी पगडंडी काटनी होगी। यह पगडंडी काटने का साहस ही पहले जरूरी है, नयी चौड़ी राह उसी में से खुलती दिखाई देगी।

तुम अपनी सहेली रचना को यह समझाओ कि क्रांति की बड़ी-बड़ी बातें करना आसान है, कोई छोटी-सी क्रांति भी कर दिखाना कठिन है और एक ही झटके में यूँ टूट-हारकर बैठ जाना तो निहायत मूर्खता है। फिर अभी तो वह प्रथम वर्ष के पूर्वार्ध में ही है। अभी से उसे ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहिए। जरूरी हो तो सोच-समझकर वे अपनी दोस्ती को आगे बढ़ा सकते हैं।

कॉलेज जीवन की पूरी अवधि में वे निकट मित्रों की तरह रहकर एक-दूसरे को देखें-जानें, जाँचें-परखें। एक-दूसरे की राह का रोड़ा नहीं, प्रेरणा और ताकत बनकर परस्पर विकास में सहभागी बनें। फिर अपनी पढ़ाई की समाप्ति पर भी यदि वे एक-दूसरे के साथ पूर्ववत् लगाव महसूस करें, उन्हें लगे कि निकट रहकर सामने आई कमियों-गलतियों ने भी उनकी दोस्ती में कोई दरार नहीं डाली है, तो वे एक-दूसरे को उनकी समस्त खूबियों-कमियों के साथ स्वीकार कर अपना लें। उस स्थिति में की गई यह कथित क्रांति न कठिन होगी, न असफल।

मेरी राय में रचना को और उसके दोस्त को तब तक धैर्य से प्रतीक्षा करनी चाहिए। इस बीच वे पूरे जतन के साथ एक-दूसरे के लिए स्वयं को तैयार करें। बिना तैयारी के जल्दबाजी में, पढ़ाई के बीच शादी का निर्णय लेना केवल बेवकूफी ही कही जा सकती है, क्रांति नहीं। ऐसी कथित क्रांति का असफल होना निश्चित ही समझना चाहिए। इतनी जल्दबाजी में तो किसी छोटे-से काम के लिए उठाया कोई छोटा कदम भी शायद ही सफल हो। यह तो जिंदगी का अहम फैसला है।

मैं समझती हूँ, रचना की इस मूर्खतापूर्ण 'क्रांति' में उसकी सहायता न करने का तुम्हारा निर्णय एक सही निर्णय है पर तटस्थ रहना ही काफी नहीं है। यदि रचना सचमुच तुम्हारी प्यारी सहेली है तो उसका हित-अहित देखना भी तुम्हारा काम है, उसमें हस्तक्षेप करना भी।

पर रचना को इसके लिए दोष देने व उसकी भर्त्सना करने से भी बात नहीं बनेगी, बिगड़ जरूर सकती है। हो सकता है, कथित प्यार के जुनून में इसका उलटा असर

हो और वह तुम्हारी बात का बुरा मानकर तुमसे कन्नी काटने लगे। इसलिए सँभलकर बात करनी होगी और सूझ-बूझ से बात सँभालनी होगी।

दोष अकेली रचना का है भी नहीं। दोष उसकी नासमझ उम्र का है या उसके उस परिवेश का है, जिसमें उसे सँभलकर चलने के संस्कार नहीं दिए गए हैं। यह उम्र ही ऐसी है जब कोई भावुक किशोरी किसी युवक की प्यार भरी, मीठी-मीठी बातों के बहकावे में आकर उसे अपना सब कुछ समझने लगती है और कच्ची, रोमानी भावनाओं में बहकर जल्दबाजी में मूर्खता कर बैठती है। पछतावा उसे तब होता है जब पानी सिर से गुजर चुका होता है।

इस अल्हड़ उम्र में अगर वह लड़की अपने परिवार के स्नेह संरक्षण से मुक्त है, आजादी के नाम पर स्वयं को जरूरत से ज्यादा अहमियत देकर अंतर्मुखी हो गई है तो उसके फिसलने की संभावना अधिक बढ़ जाती है। अपने में अकेली पड़ गई लड़की जैसे ही किसी लड़के के संपर्क में आती है, उसे अपना हमदर्द समझ बैठती है और उसके बहकने की, उसके कदम भटकने की संभावना और भी बढ़ जाती है। लगता है, अपने परिवार से कटी रचना के साथ ऐसा ही है। यदि सचमुच ऐसा है तो तुम्हें और भी सावधानी से काम लेना होगा अन्यथा उसे समझाना मुश्किल होगा, उलटे तुम्हारी दोस्ती में दरार आ सकती है।

एक अच्छी सहेली के नाते तुम उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करो। अगर लगे कि वह अपने परिवार से कटी हुई है तो उसकी इस टूटी कड़ी को जोड़ने का प्रयास करो। जैसे तुम मुझे पत्र लिखती हो, उससे भी कहो; वह अपनी माँ को पत्र लिखे। अपने घर की, भाई-बहनों की बातों में रुचि लें। अपनी समस्याओं पर माँ से खुलकर बात करे और उनसे सलाह ले। यदि उसकी माँ इस योग्य न हो तो वह अपनी बड़ी बहन या भाभी से निर्देशन ले। यह भी संभव न हो तो अपनी किसी समझदार सहेली या रिश्तेदार को ही राजदार बना ले। घर में किसी से भी बातचीत का सिलसिला जोड़कर वह अपनी समस्या से अकेले जूझने से निजात पा सकती है। नहीं तो तुम तो हो ही। ऐसे समय वह तुम्हारी बात न सुने, तुम्हें झटक दे, तब भी उसकी वर्तमान मनोदशा देखकर तुम्हें उसकी बात का बुरा नहीं मानना है। उसका मूड देखकर उसका मन टटोलो और उसे प्यार से समझाओ।

एक शुभचिंतक सहेली के नाते ऐसे समय तुम्हें उसे इसलिए अकेला नहीं छोड़ देना है कि वह तुम्हारी बात नहीं सुनती या तुम्हारी बात का बुरा मानती है। तुम साथ छोड़ दोगी तो वह और टूट जाएगी। अकेली पड़कर वह उधर ही जाने के लिए कदम बढ़ा लेगी, जिधर जाने से तुम उसे रोकना चाहती हो। यहीं पर तुम्हारे धैर्य और संयम की परीक्षा है।

अगर जरूरी समझो तो सहेली के कथित दोस्त या प्रेमी लड़के से भी किसी समय बात कर सकती हो। उसकी मंशा जानकर उससे अपनी सहेली को अवगत करा सकती हो या आगाह कर सकती हो।

यदि तुम्हें लगे कि लड़का निर्दोष है, निश्चल है, अपने प्यार में सच्चा या अडिग लगता है तो दोनों को पढ़ाई के अंत तक प्रतीक्षा करने और तब तक केवल दोस्त बने रहने का परामर्श दे सकती हो।

पर यहाँ भी तुम्हें सतर्कता बरतनी होगी। रचना को विश्वास में लेकर दोस्ती के दौरान उससे कोई गलत कदम न उठाने का वायदा लेना होगा, वरना दूसरों की आग बुझाते अपने हाथ जला लेना कोई अनहोनी या असंभव बात नहीं। इसीलिए मैंने कहा है, यह तुम्हारी सूझ-समझ की भी परीक्षा होगी। और एक बात, यह मत समझना कि सलाह केवल तुम बेटी हो इसलिए दी जा रही है, यही सलाह कोई भी माँ अपने पुत्र को भी देगी। ये बातें बेटा-बेटी के लिए समान रूप से लागू होती हैं।

मैं इसके परिणाम की प्रतीक्षा करूँगी। अगले पत्र में जानकारी देना। दोगी न ?

— तुम्हारी माँ

(‘सुनो किशोरी’ पत्र संग्रह से)

— o —

शब्दार्थ

डैना = पंख

अवांछित = जिसकी इच्छा न की गई हो

भरहराकर = तेजी से

निहायत = अत्याधिक, पूरी तरह से

जुनून = पागलपन, उन्माद

अंतर्मुखी होना = अपने भीतर झाँककर सोचना

निजात = छुटकारा

आगाह करना = सूचित करना,

यथार्थ = सच्चाई/वास्तविकता

क्षत-विक्षत = बुरी तरह से घायल, लहू-लुहान

बुनियादी = मौलिक

भर्त्सना = अनुचित काम के लिए बुरा-भला कहना

अल्हड़ = भोला-भाला

राजदार = भेद जानने वाला/भेदिया

मंशा = इच्छा

निश्चल = छल रहित

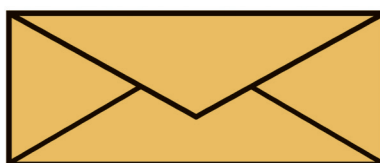
मुहावरे

धरती पर निगाह रखना = वास्तविकता से जुड़े रहना

राह का रोड़ा बनना = उन्नति में बाधा बनना

फलीभूत होना = फल में परिणत होना, परिणाम निकल आना

कन्नी काटना = बचकर निकल जाना



आकलन

१. (अ) अंतर स्पष्ट कीजिए :-

अ.क्र.	रूढ़ि	परंपरा
१.		
२.		

(आ) कारण लिखिए :-

(१) सुगंधा का पत्र पाकर लेखिका को खुशी हुई

(२) पश्चिमी मूल्य रूपी फल हमारे किसी काम के नहीं होंगे

शब्द संपदा

२. शब्द युग्म को पाठ के आधार पर पूर्ण कीजिए :-

(१) क्षत -

(२) आदान -

(३) सूझ -

(४) सोच -

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'विद्यार्थी जीवन में मित्रता का महत्त्व', इस विषय पर अपना मंतव्य लिखिए ।

(आ) 'युवा पीढ़ी किस ओर', इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

पाठ पर आधारित लघूत्तरी प्रश्न

४. (अ) 'उड़ो बेटा, उड़ो ! पर धरती पर निगाह रखकर', इस पंक्ति में निहित सुगंधा की माँ के विचार स्पष्ट कीजिए ।

(आ) पाठ के आधार पर रूढ़ि-परंपरा तथा मूल्यों के बारे में लेखिका के विचार स्पष्ट कीजिए ।

५. (अ) आशारानी बहोरा जी के लेखन कार्य का प्रमुख उद्देश्य -

(आ) आशारानी बहोरा जी की रचनाएँ -

६. कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार अर्थ के आधार पर वाक्य परिवर्तन करके फिर से लिखिए :

(१) मनुष्य जाति की नासमझी का इतिहास क्रूर और लंबा है। (प्रश्नार्थक वाक्य)

.....

(२) दया निर्बल थी, वह इतना भार सहन न कर सकी। (निषेधात्मक वाक्य)

.....

(३) अपनी समस्याओं पर माँ से खुलकर बात करके उनसे सलाह ले। (प्रश्नार्थक वाक्य)

.....

(४) मेरे साथ न्याय नहीं हुआ है। (विधि वाक्य)

.....

(५) शेष आप इस लिफाफे को खोलकर पढ़ लीजिए। (आज्ञार्थक वाक्य)

.....

(६) ऐसे समय वह तुम्हारी बात न सुने। (विधि वाक्य)

.....

(७) वे निरर्थक हैं तो फिर सार्थक क्या है? (विधानार्थक वाक्य)

.....

(८) मैं तुम्हें खिलौना समझता रहा और तुम साँप निकले। (विस्मयादिबोधक वाक्य)

.....

(९) इस क्षेत्र में भी रोजगार की भरपूर संभावनाएँ हैं। (निषेधात्मक वाक्य)

.....

(१०) आप भी तो एक विख्यात फीचर लेखक हैं। (विस्मयादिबोधक वाक्य)

.....